PRSU UNIVERSITY-2016

HINDI LITERATURE (Prachin Hindi Kavya)-2016

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) कबीर सुमिरण सार है, और सकल जंजाल ।
आदि अंति सब सोधिया, दूजा देखौं काल ॥
पंच संगी पिव-पिव करै, छठा जू सुमिरै मंन ।
आई सूति कबीर की, पाया राम रतंन ॥

a2zSubjects.com

या पूस जाड़ थर थर तन काँपा । सुरुज जाइ लंका दिसि चाँपा ॥
बिरह बाढ, दारुन भा सीऊ । कँपि कँपि मरौं, लेई हरि जीऊ ॥
कंत कहाँ लागौं ओहि हियरे । पंथ अपार, सूझ नहिं नियरे ॥
सौर सुपेती आवै जूड़ी । जानहु सेज हिवंचल बूड़ी ॥
चकई निसि बिछुरै, दिन मिला । हौं दिन राति विरह कोकिला ॥
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी । कैसे जियै बिछोही पखी ॥
बिरह सचान भएउ तन जाड़ा । जियत खाइ और मुए न छाँड़ा ॥
रकत ढुरा माँसू गरा, हाड़ भएउ सब संख ।
धनि सारस होइ ररि मुई, पीउ समेटहि पंख ॥

(ख) हम तौ नन्दघोष की बासी ।
नाम गोपाल, जाति कुल गोपहि, गोप-गोपाल-उपासी ॥
गिरिवरधारी, गोधनचारी, वृन्दाबन अभिलाषी ॥
राजा नन्द, जसोदा रानी, जलधि नदी जमुना सी ॥
प्रान हमारे परम मनोहर, कमलनयन सुखरासी ।
सूरदास प्रभु कहौं कहाँ लौं अष्ट महासिधि दासी ॥

या मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत्रु बोलाए ॥
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए । भूप सुमंगल वचन सुनाए ॥
जौं पाँचहि मत लागै नीका । करहु हरषि हियँ रामहि टीका ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी । अभिमत बिरवँ परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिं कर जोरी । जिअहु जगतपति बरिस करोरी ।
जग मंगल भल काजु बिचारा । बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥
नृपहिं मोदु सुनि सचिव सुभाषा । बढत बौड़ जनु लही सुसाखा ॥
कहेउ भूप मुनिराज कर जोइ-जोइ आयसु होइ ।
राम राज अभिषेक हित बेगि करहु सोइ सोइ ॥

(ग) प्रीतम सुजान मेरे हित के निधान कहौ,
कैसे रहैं प्रान जौ अनखि अरसाय हौ ।
तुम तो उदार दीन हीन आनि परयौ द्वार
सुनियै पुकार याहि कौ लौं तरसाय हौ ॥
चातकि है रावरो अनोखे-मोह- आवरो,
सुजान रूप-बावरो, बदन दरसाय हौ ।
बिरह नसाय दया हिय में बसाय आय,
हाय ! कब आनंद को घन बरसाय हौ ॥

a2zSubjects.com

या घन आनन्द जीवनमूल सुजान की कौंधन हूँ न कहूँ दरसैं ।
सुन जानियै धौं कित छाय रहे दृग चातक प्रान तपे तरसैं ।
बिन पावस तौं इन ध्यावसहोन, सु क्यौं करि यौ अबसो परसैं ।
बदरा बरसैं रितु में घिरिकै नित ही अँखियाँ उघरी बरसैं ॥

2. कबीर काव्य में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख कर सविस्तार समझाइए ।

या "जायसी बहुश्रुत एवं बहुपठ कवि हैं ।" इस कथन के आलोक में जायसी के व्यक्तित्व व कृतित्व की युक्तियुक्त समीक्षा कीजिए ।

3. सूरदास द्वारा भ्रमरगीत में वर्णित गोपियों के उक्तिवैचित्र्य की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए ।

या तुलसीदास के समन्वयवादी दृष्टिकोण पर विस्तार से प्रकाश डालिए ।

4. घनानन्द "प्रेम की पीर के गायक हैं ।" इस कथन के आलोक में घनानन्द की काव्यगत विशेषताओं पर विस्तार से समझाइए ।

या सगुण भक्ति काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

5. निम्नलिखत में किन्हीं तीन पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :
(i) विद्यापति के काव्य में गीतात्मकता (ii) रसखान का रचना-संचार (iii) निर्गुण भक्ति (iv) रीतिकाल (v) रहीम की भाषा (vi) प्राचीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि

6. निम्नलिखित के उत्तर दीजिए (कोई बारह) :
(i) पद्मावत महाकाव्य के प्रमुख पात्र का नाम बताइए ।
(ii) हिन्दी साहित्य के इतिहास को कितने कालों में बाँटा गया है ?
(iii) कबीरदासजी को "वाणी का डिक्टेटर" किनके द्वारा कहा गया ?
(iv) भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य में किस नाम से जाना जाता है ?
(v) तुलसी दास जी द्वारा रचित महाकाव्य का नाम बताइए ।
(vi) सूरसारावली के रचनाकार का नाम बताइए ।
(vii) सूरदासजी के गुरु का नाम बताइए ।
(viii) दोहे छंद के लिए किस कवि को जाना जाता है ?
(ix) जायसी का काव्य किस भाषा में लिखा गया है ?
(x) आपके निर्धारित पाठ्यक्रम प्राचीन हिन्दी काव्य के सम्पादक का नाम बताइए ।
(xi) रहीम कवि का पूरा नाम क्या था ?
(xii) अपनी पाठ्य-पुस्तक में संकलित भक्तिकालीन कवि का नाम बताइए ।
(xiii) मैथिल कोकिल किस कवि को कहा जाता है ?
(xiv) आपकी पाठ्य-पुस्तक में पद्मावत का कौन-सा खण्ड संकलित है ?
(xv) रत्नसेन की रानी का नाम क्या था ?

a2zSubjects.com